

क्या आप जानते हैं?



- कोआला के फिंगरप्रिंट्स (पैटन, शोप और साइज) इंसान के फिंगरप्रिंट्स जैसे ही होते हैं।
- म्यूजिक क्रॉनिक पेन को 20 फीसदी और डिप्रेशन को 25 फीसदी कम कर सकता है।
- ऊंट का दूध अरब देशों में काफी पिया जाता है। इसमें गाय के दूध के मुकाबले 10 गुना अधिक आयरन पाया जाता है।
- हिमालय ने पृथ्वी की सतह का 1/10 हिस्सा ढंका हुआ है।
- यदि व्हेल का ईको सिस्टम फेल हो जाए, तो उसकी मौत हो जाती है।
- पेट में करीब साढ़े तीन करोड़ डाइजैस्टिव ग्लैंड्स होते हैं।
- 1850 से पहले गोल्फ की गेंद चमड़े से बनाई जाती थी और इसमें पंख भरे जाते थे।
- चाइनीज सक्रिप्ट में 40,000 से अधिक कैरेक्टर्स हैं।
- पीटर द ग्रेट के शासन के दौरान दाढ़ी रखने वाले रशियन आदमियों को एक खास टैक्स देना पड़ता था।

दिमाग की बत्ती

पानी की बूंदें गोल होती हैं क्यों?



पानी के अणु इसे गतिशील रखते हैं, परंतु ये पूर्णतः अलग नहीं होते, क्योंकि ये लगातार एक-दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पानी की सतह के अणु एक प्रकार की झिल्ली का निर्माण करते हैं, जो कम भार की वस्तुओं को सहारा दे सकती है। जो बल इन अणुओं को आपस में जोड़े रखता है, उसे 'सतहीय दबाव' कहते हैं। जब आप गिलास को पानी से ऊपर तक भरें, तब उसकी सतह को पास से देखें। ऊपरी सतह के किनारों पर पानी जरा-सा वक्राकार मुड़ा होता है। इन घुमावों को ही सतहीय दबाव कहते हैं। पानी को एक बैग की तरह जोर से खींचें, अगर यह कम मात्रा में होगा, तो सतहीय दबाव उसे गोल बूंद में बदल देगा।

पानी पर तैरता शहर वीनस



युद्ध की विभीषिकाओं और समुद्री लुटेरों से इतिहास संजोने वाला वीनस शहर आज कला-संस्कृति और प्रेम की प्रतिमूर्ति के रूप में जाना जाता है...

विश्व के खूबसूरत व प्राचीन शहरों की बात करें, तो इटली के वीनस शहर का नाम बरबस ही हॉटो पर आ जाता है। इसे पानी पर तैरता शहर कहा जाता है, क्योंकि यह छोटे-छोटे कई टापुओं का समूह है, जिन्हें विभिन्न पुलों से आपस में जोड़ा गया है। वीनस में 160 नहरें हैं, जिन्हें 409 पुलों से आपस में जोड़ा गया है। यह शहर लकड़ी के पोलस पर बनाया गया है।



आप यहां के खूबसूरत लगून देखने के लिए वाटर बस और वाटर टैक्सी ले सकते हैं। शहर के बीच से बहने वाली नदियों के मोड़ों पर बने हुए ओपन कैफेटेरिया में कॉफी पीने का अपना ही आनंद है। वीनस के संरक्षक सेंट मार्क के जन्म दिवस 25 अप्रैल 421 ईस्वी को वीनस की स्थापना की गई। उस समय समुद्र के बीच स्थित वीनस एक छोटा-सा गांव टोसैलो था। सेंट मार्क का शहर होने की वजह से इसका अपना धार्मिक महत्व भी है। शहर के करीब हर मोड़ पर बने हुए गिरजाघर लोगों की आस्था की कहानी बयान करते हैं। सेंट मार्क स्क्वायर में लगे हुए घंटे की आवाज के आते ही लोगों में गिरजाघरों में जाकर प्रार्थना करने की जैसे होड़-सी लग जाती है। पानी पर तैरते शहर की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं पानी में चलने वाले गिंडोले (चपुओं से चलने वाली स्थानीय किश्ती)। इन गिंडोलों को चलाने वाले स्थानीय भाषा में लोक गीत सुनाकर लोगों का मन मोह लेते हैं। इन लोक गीतों में वीनस के महान प्रेमी के रूप में मशहूर कासानोवा की प्रेम कहानियां और कुछ स्थानीय कहानियां शामिल रहती हैं। स्थानीय लोक गायक गिटार से मिलता- जुलता एक स्थानीय वाद्य-यंत्र बजाते हैं, जो वीनस की पहचान बन चुका है। वीनस के संग्रहालयों में रखी हुई कलाकृतियां विश्व की अनमोल धरोहरों में से हैं, जिनमें पिकासो की पेंटिज और मार्क के तांबे के चार घोड़े का अपना महत्व है।

हिससा बन गया। 1848 में वीनस वासियों ने अपनी मातृ-भूमि को स्वतंत्र करवाने के प्रयास शुरू किए। 1860 में गूसोप गरीबल्दी की फौज ने सवोया साम्राज्य के नियंत्रण में इटली को राज्य का दर्जा दिलाने में कामयाबी हासिल कर ली, तीसरे स्वतंत्रता युद्ध के बाद 1866 में वीनस इटली का भाग बन गया।

प्राकृतिक आपदाएं
1348 में महामारी के कारण वीनस की जनसंख्या आधी रह गई। इसके बावजूद वह मैडिटेरियन समुद्र की चार महाशक्तियों में अपना नाम दर्ज करवाने में सफल रहा। अन्य तीन महाशक्तियों के नाम अमाल्फी गणराज्य, जिनोवा तथा लॉ स्पेजिया थे। 1630 में दूसरी बार वीनस में महामारी फैली और इसका पतन आरंभ हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों में अवरोध उत्पन्न हो गया। 1966 में आई बाढ़ ने शहर को काफी क्षति पहुंचाई। तब पानी का स्तर दो मीटर तक बढ़ गया था। आज भी कई गिरजाघरों व अन्य स्थानों पर पानी के निशान देखे जा सकते हैं।

सेंट मार्क स्क्वायर
सेंट मार्क स्क्वायर का निर्माण 814 ईस्वी में हुआ। 1902 में इसका बैल टॉवर ढह गया। 1912 में इसका पुर्ननिर्माण किया गया।

मार्को पोलो की चीन यात्रा
वीनस के व्यापारी मार्को पोलो ने वीनस से चीन तक की यात्रा मध्यकाल (1271-95 ई.) में की। '11 मिलियन' नामक पुस्तक में चंगेज खान से उसकी मुलाकात के हैरतअंगेज किस्से दर्ज हैं।

जिराफ नहीं है यह

ओकापी जिराफ की तरह दिखाई देता है। इसे छोटी गर्दन वाला जिराफ भी कहते हैं। देखने में अत्यंत खूबसूरत ओकापी अफ्रीका महाद्वीप के देश जायर के उत्तर-पूर्व के ट्रांपिकल जंगलों में पाए जाते हैं। चॉकलेट ब्राउन रंग के ओकापी की टांगों पर मटमैले सफेद रंग की आड़ी लाइनें होती हैं। ओकापी की खोज 1901 में हुई, पर प्राचीन मिश्रवासियों को इसकी जानकारी काफी पहले से ही थी। इनकी लंबाई 1.9 से 2.5 मीटर तक होती है और कंधों तक ऊंचाई डेढ़ से दो मीटर तक होती है। इनकी पूंछ की लंबाई 30- 42 सेंटीमीटर होती है। नर ओकापी के बालों से ढंके सींग होते हैं, जो 15 सेंटीमीटर से अधिक लंबे नहीं होते। मादा ओकापी के सींग नहीं होते, पर यह नर से औसतन 4.2 सेंटीमीटर लंबी होती है। इनके कान काफी बड़े आकार के होते हैं, जो परभक्षी का पता लगाने में इनकी मदद करते हैं। इनकी जीभ 14 से 18 इंच लंबी होती है। काले रंग की इस नुकीली जीभ का इस्तेमाल ये पेड़ों की शाखाओं से कोपलें, पत्ते और फल तोड़ने के लिए करते हैं। यह एकमात्र ऐसा जानवर है, जो अपनी जीभ से अपने कान साफ कर सकता है।



समय का सफर

- दिन-रात और समय के चक्करों को समझने के लिए मनुष्य ने घड़ी का आविष्कार किया। घड़ी के आज के स्वरूप तक की यात्रा पर एक नजर-
- 500-300 ईपू मिस्र में पहली बार सूर्य घड़ी का उपयोग किया गया।
 - 400 ईपू - ग्रीस के लोग पत्ती की घड़ी से समय का पता लगाने लगे।
 - 980ई- राजा एफ्रेड जलती मोमबत्ती से समय का निर्धारण करते थे।
 - 1657 ई- क्रिस्टियन हाइगंस ने पहली पेंडुलम घड़ी बनाई।
 - 1838 ई- लुईस ऑडीमार्स ने पेंचदार घड़ी और उसकी यांत्रिकी की खोज की।
 - 1868 ई- पेटेक फिलिपी ने पहली रिस्टवॉच का आविष्कार किया।
 - 1888 ई - कॉर्टियर ने पहली लेडीज रिस्टवॉच बनाई।
 - 1902 ईस्वी- पहली ओमेगा रिस्टवॉच बनी। जर्मनी में 93000 घड़ियां बिकीं।
 - 1914 ई. - पहली अलार्म रिस्टवॉच एटरना द्वारा बनाई गई।
 - 1923ई- पहली ऑटोमेटिक रिस्टवॉच जॉन हार्डवुड ने बनाई।
 - 1957 ई. - हैमिल्टन ने पहली इलैक्ट्रॉनिक वॉच का निर्माण किया। आज ढेरों प्रकार की इलैक्ट्रॉनिक डिजिटल घड़ियां मौजूद हैं, जिनमें कई तरह की ऐसी सुविधाएं शामिल हैं।

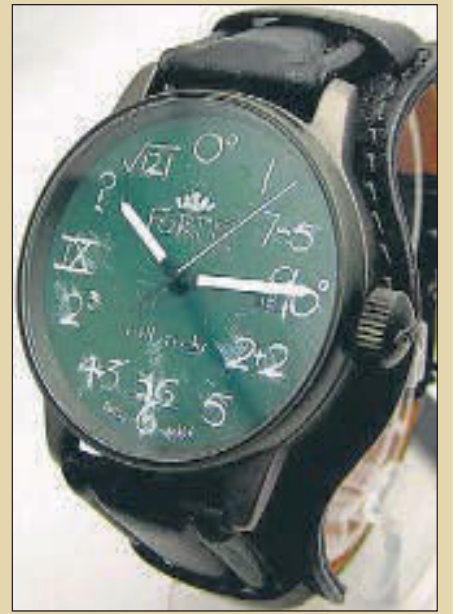
इस पुस्तक मेले में भी आएँ जरूर

बच्चों, आज आप हमारे साथ जालंधर के देश भक्त यादगार हाल चलें। मालूम है क्यों? क्योंकि वहां आजकल जालंधर पुस्तक मेला चल रहा है। इस मेले में बच्चों के लिए खासतौर पर नेशनल बुक ट्रस्ट ने बच्चों की पुस्तकों के 2000 टाइटिल प्रदर्शित किए हैं। अकेले पंजाबी में 200 से ज्यादा पुस्तकें बच्चों के लिए प्रकाशित की हैं। इस बारे में ट्रस्ट के संयुक्त निर्देशक बलदेव सिंह बदन ने बताया कि लगभग 13 भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य को हमने प्रकाशित किया है। इसके अलावा 7 आसामी जनजातियों के बाल साहित्य को भी अंग्रेजी और हिंदी में अनुवाद करवाया गया है। बच्चों, आपको इस मेले में दुनिया भर का बाल साहित्य मिलेगा। इसमें जैको, लोकगीत और दीपक

पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित किया गया बाल साहित्य भी आपको मिलेगा। हर तरह की जानकारियों से भरा हुआ साहित्य, आपकी पढ़ाई से जुड़ा हुआ साहित्य, आपके बारे में लिखा हुआ साहित्य, पक्षियों के बारे में, देशों के बारे में, फूलों के बारे में और आपके मनपसंद खेलों के बारे में। बहुत कुछ और भी है, इसलिए आप अपने बड़ों को भी साथ ले जाना न भूलें। मेले में देश भर से प्रकाशक आए हैं और दुनिया भर का साहित्य आपका स्वागत करेगा। यह मेला 10 अप्रैल तक चलेगा और आप कभी भी वहां जा सकते हैं। वहां किसी तरह का टिकट भी नहीं लगता। हर रोज साहित्य पर कार्यक्रम भी होते हैं। आप वहां अपने प्रिय लेखकों से भी मिल सकते हैं।



हम बताएं, आप बनाएं



लघुकथाएँ

मन्मत

उसी फूलवाली से हमेशा फूलमाला, पूजा का सामान खरीदने से पहचान-सी हो गई है। उसके टेले के नीचे चपलें उतारकर वे बड़ी बेफिक्र हो देर तक पूजा-अर्चना करती रहती हैं। कल फूलवाली के साथ उसका आठेक साल का बेटा भी माला पिरो रहा था, तो वह भी पूजा की टोकरी ले उनके साथ मंदिर में चला आया। गणपतिजी का प्राचीन मंदिर। चौखट पर पेड़ों की छांटाई पर घंटियों पर सैकड़ों नाड़े बँधे थे मन्मतों के। दीवारों पर, खंबों पर चॉक से, पेंसिल से मानताएँ माँग भी लिखी थीं। लोग जोर-जोर से पढ़कर परस्पर सुना रहे थे और कुछ अपनी मन्मत लिख भी रहे थे, इसी विश्वास के साथ कि ईश्वर उनकी पुकार अवश्य सुनेंगे। बालक सब देखता, सुनता रहा और मंदिर से बाहर आते ही बोला- 'आटीजी, आप मुझे लिखना-पढ़ना

सिखा दो। दिन में तो मैं चाय की गुमटी पर मजुरी पर जाता हूँ... शाम को पढ़ने आया कलूँ... मैं भी अपनी मन्मत लिखकर भेजूँगा भगवानजी के पास।' 'तुझे क्या माँगना है भगवान से, जिसके लिए तूने पढ़ना-लिखना सीखने की ठान ली?' 'मैं भगवान को लिखकर विनती करूँगा कि वे मेरे पापा की शराब पीने की लत छुड़ा दें और मुझे कुछ नहीं चाहिए।' सुनकर वे थर्रा गईं। बच्चे की माँग तुकराने का प्रश्न ही नहीं था। वे बालक को पढ़ना-लिखना सिखा रही हैं और उन्हें उम्मीद है कि जिस दिन बालक अपनी माँग लिखकर अपने पिता को और परमात्मा को चिट्ठी लिखेगा... पिता और परमपिता दोनों ही उसकी मन्मत अवश्य पूरी करेंगे।



समुद्र में जहां प्लैंकटन बहुत कम होता है, वहां पानी बहुत साफ दिखाई देता है, यहां जीवों के लिए जिंदा रहना एक बहुत बड़ी चुनौती होती है...

प्रशांत महासागर का नाम लैटिन नाम 'ट्रेपरे पैसिफिकम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है- शांत समुद्र। प्रशांत महासागर पांच महासागरों में से सबसे बड़ा और गहरा महासागर है। यह पृथ्वी के एक-तिहाई हिस्से पर फैला हुआ है। यह अमेरिका से 18 गुणा बड़ा है। इतने विशाल क्षेत्र में फैले होने के कारण यहां रहने वाले जीवों में पृथ्वी के अन्य भागों के सागरों की अपेक्षा बड़ी विभिन्नता है। प्रशांत महासागर उत्तर में आर्कटिक से दक्षिण में अंटार्कटिका, पश्चिम में एशिया व ऑस्ट्रेलिया और पूर्व में अमेरिका तक फैला हुआ है। इसमें लगभग 20,000 टापू हैं। इसकी औसत गहराई 14,000 फुट है। पश्चिम-उत्तर प्रशांत महासागर में 'द मरियाना ट्रेंच' दुनिया का सबसे गहरा प्वाइंट है। इसकी गहराई 35,800 फुट (10,911 मीटर) है। प्रशांत महासागर उत्तरी प्रशांत महासागर और दक्षिणी प्रशांत महासागर में बंटा हुआ है। वैज्ञानिक अन्वेषकों और साहसिक नाविकों द्वारा गत सैंकड़ों सालों में महासागर के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की अनेक कोशिशें की गईं। अब भी निरंतर प्रशांत महासागर के गर्भ के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिये खोजें जारी हैं।

समुद्रीय रेगिस्तान



अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका निभाता है, जिन्हें इसका पानी झूठा है। यह पूर्व और पश्चिम के बीच सस्ती ट्रांसपोर्टेशन मुहैया कराता है। इसके ऑयल और गैस रिजर्व्स अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चीन और पेरू की एनर्जी सप्लाई में अहम भूमिका निभाते हैं। ऑस्ट्रेलिया के पास दक्षिण प्रशांत महासागर का पानी खूबसूरत नीले रंग का है। यहां पानी जितना साफ है, उतना शायद ही कहीं हो। इसका कारण यह है कि यहां प्लैंकटन कम है। इसलिए इसे समुद्रीय रेगिस्तान भी कहते हैं। इसलिए यहां जिंदा रहना बहुत बड़ी चुनौती है। इस इलाके में मछलियां और दूसरे समुद्री जीव बहुत कम संख्या में पाए जाते हैं। किलर व्हेल को पकड़ने निकले एक 87 फुट लंबे जहाज को जब व्हेल ने समुद्र में पलट दिया, तो उसमें सवार 21 नाविक किसी तरह जान बचाने में कामयाब हो गए। दक्षिण प्रशांत महासागर में जिंदा रहने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने अपने संस्मरणों में लिखा है कि समुद्र के बीच पानी की प्यास इंसान को बेइतहा तोड़ देती है, पर वे इस बात से हैरान थे कि इस इलाके में उन्हें एक भी मछली नहीं मिल रही थी, हालांकि वे बहुत माहिर नाविक थे। दक्षिण प्रशांत महासागर में जिंदा रहने के लिए कई जीव हजारों किलोमीटर की लंबी दूरी तय करके दूसरी जगह चले जाते हैं। वहां दूसरी ओर, स्पर्म व्हेल कई हजार किलोमीटर की दूरी तय करके अंटार्कटिका से प्रजनन के लिए यहां के गर्म पानी में आती हैं।